।। ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः ।।

विश्व में धार्मिक क्रांति के प्रणेता

समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का

सिद्धयोग दर्शन

संक्षिप्त परिचय पुस्तिका

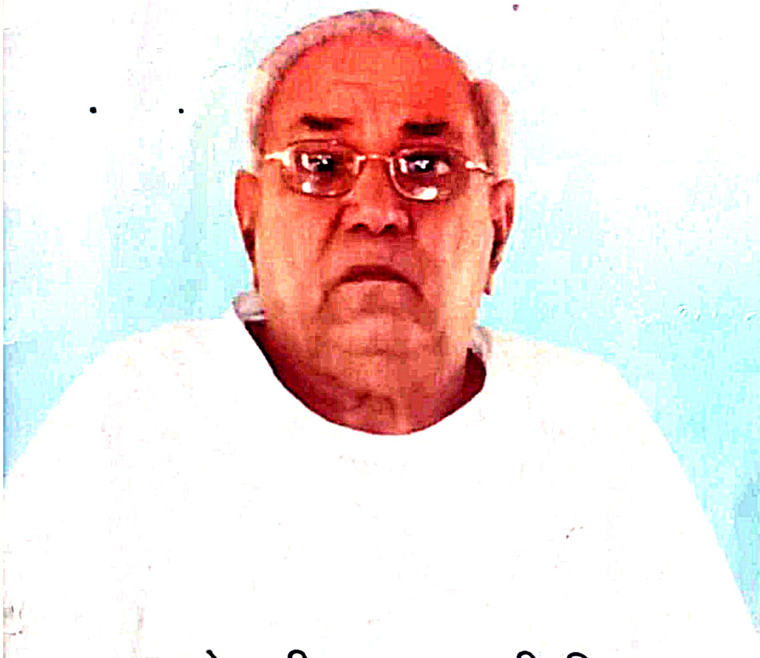

सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
(संस्थापक A.V.S.K. जोधपुर)

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी
(गुरुदेव सियाग के गुरुदेव)

"मानवता में सतोगुण का उत्थान और तमोगुण का पतन करने संसार में अकेला ही निकल पड़ा हूँ। मुझ पर किसी भी जाति-विशेष, धर्म-विशेष तथा देश-विशेष का एकाधिकार नहीं है।"

-समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

DOWNLOAD BOOK FROM: https://www.hindibook.in/

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी

बाबा श्री गंगाईनाथ जी का आश्रम, जामसर—बीकानेर (राजस्थान)

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के पूज्य गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ योगी आईपंथी नाथ सन्यासी थे। उनका जन्म राजस्थान के ब्यावर जिले के सिरमा ग्राम में हुआ। वे बाल्यकाल से ही ईश्वर की भक्ति में लीन रहते थे। उनका प्रारम्भिक आराधना काल अस्थलबोहर अखाड़े (हरियाणा), बनारस व हिमाचल प्रदेश में बीता। उसके बाद राजस्थान के पाली जिले में काजलवास (ग्यारह नाथों की समाधि) नामक स्थान पर आराधना कर रहे नाथ योगी बाबा श्री भाऊनाथ जी ने अपनी आध्यात्मिक शक्ति से गंगाईनाथ जी को बुलाया तथा गुरु-पद व शक्तिपात दीक्षा की सम्पूर्ण सामर्थ्य प्रदान की।

कई वर्षों तक काजलवास में तपस्या करने के बाद बाबा श्री गंगाईनाथ जी ने बीकानेर के पास जामसर नामक स्थान पर रेत के टीले पर धूणा स्थापित कर लम्बे समय तक तपस्या की। फिर अप्रेल 1983 में अपनी योग शक्ति से बीकानेर रेलवे में कार्यरत श्री रामलालजी सियाग को बुलाकर, गुरुपद सौंपकर आदेश दिया कि "वैदिक दर्शन को विश्व दर्शन बनाना है।" तत्पश्चात् 31.12.1983 को जामसर में ही समाधिस्थ हो गये। वर्तमान में जामसर समाधि राजस्थान प्रदेश के बीकानेर शहर से 27 कि. मी. दूर श्रीगंगानगर मार्ग पर स्थित है।

DOWNLOAD BOOK FROM: https://www.hindibook.in/

जीवन परिचय

पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग प्रवृतिमार्गी संत थे। उनका जन्म राजस्थान के नागौर जिले के छीला गांव में हुआ, जो उनका ननिहाल था। लेकिन उनका बाल्यकाल अपने पैतृक गाँव पलाना (जिला बीकानेर) में ही बीता। वे मात्र तीन वर्ष के थे तब उनके पिताजी का स्वर्गवास हो गया। निर्धन किसान परिवार से होने के कारण अनेक कष्ट सहते हुए उनकी पूज्य माताजी ने उनका पालन-पोषण किया। एक समय उन्हें अनाथालय में रहकर भी शिक्षा ग्रहण करनी पड़ी। शिक्षा के उपरांत श्री रामलालजी सियाग को भारतीय रेलवे में क्लर्क के पद पर नौकरी मिल गयी। **1967–68** में उनके जीवन में अचानक बदलाव आने लगे और विकट परिस्थितियों में उन्होने गायत्री मंत्र की आराधना की। पूर्ण श्रद्धा और एकाग्रता से की गई इस साधना के परिणाम स्वरूप **1 जनवरी 1969** की प्रातः वेला में उन्हें गायत्री (निर्गुण निराकार) की सिद्धि हो गई। इससे उनके पूरे शरीर में दिव्य प्रकाश उत्पन्न हो गया और वे आध्यात्मिक साधना मे पूर्ण समर्पित हो गये।

कई वर्षों की तपस्या और साधना के बाद स्वामी विवेकानन्द के लेख पढ़ते हुए उनके मन में गुरु धारण करने की प्रबल इच्छा हुई। देश के समकालीन प्रसिद्ध संतो व गुरुओं से मिलने के पश्चात् श्री सियाग ने 1983 में बीकानेर के पास जामसर में आराधना कर रहे नाथ योगी बाबा श्री गंगाईनाथजी को गुरु धारण कर लिया।

बाबा श्री गंगाईनाथ जी एक आईपंथी नाथ योगी थे। दिसम्बर 1983 में श्री गंगाईनाथ जी ब्रह्मलीन हो गए और श्री रामलालजी सियाग को गुरु पद सौंपकर यह आदेश दे दिया कि अब आगे का कार्य आपको करना है। इसके बाद गुरुदेव श्री सियाग की आध्यात्मिक साधना को गति मिली और बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी की अहैतुकी कृपा से वर्ष 1984 में गुरुदेव सियाग को भगवान् श्रीकृष्ण (सगुण साकार) की सिद्धि हो गई। इस प्रकार एक ही जीवन में, एक ही शरीर में रहते हुए गुरुदेव सियाग को ईश्वर के दोनों स्वरूपों निर्गुण निराकार (गायत्री) और सगुण साकार (श्रीकृष्ण) की सिद्धियाँ हो गयी। इन दोनों सिद्धियों के कारण गुरुदेव सियाग के शरीर का दिव्य रुपांतरण हो गया और उनमें लाखों लोगों को एक साथ शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण करके सम्पूर्ण मानवता में दिव्य रुपांतरण करने का सामर्थ्य आ गया। महर्षि अरविन्द के अनुसार जब एक व्यक्ति में दोनों सिद्धियाँ (सगुण साकार व निर्गुण निराकार) हो जायेगी तब समस्त मानवता का कल्याण हो जायेगा। अतः बाबा श्री गंगाईनाथ जी के अध्यात्मिक आदेश से गुरुदेव सियाग ने वर्ष 1986 में रेलवे से स्वैच्छिक सेवानिवृति ले ली तथा मानवता के कल्याण हेतु वर्ष 1990 से सार्वजनिक रूप से शक्तिपात–दीक्षा देना प्रारम्भ कर दिया।

इस दर्शन को विश्व दर्शन बनाने हेतु गुरुदेव ने 1993 में अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर की स्थापना की। तब से आज तक करोड़ो लोग पूज्य गुरूदेव की कृपा से अध्यात्मिक रूप से चेतन हो चुके हैं।

निर्जला एकादशी के दिन 5 जून 2017 को सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग ने मानव देह त्याग कर गोलोक वापसी कर ली, लेकिन अब मानव जाति के दिव्य रूपांतरण का कार्य उनकी वाणी और उनके चित्र के माध्यम से पूरे विश्व मे तेजी से बढ़ रहा है।

DOWNLOAD BOOK FROM: https://www.hindibook.in/

विश्व में आध्यात्मिक क्रांति

'धर्म का प्रमाण किसी ग्रंथ पर नहीं, मनुष्य की रचना की सत्यता पर निर्भर है। ग्रंथ तो मनुष्य की रचना के बर्हिगमन हैं, बौद्धिक परिणाम हैं, मनुष्य ही इन ग्रंथो के प्रणेता हैं। अतः जब तक संसार में मनुष्य शरीर-रुपी सुन्दर ग्रंथ को पढने का दिव्य विज्ञान प्रकट नहीं होगा, तब तक विश्व शांति का भाव "मृगमरीचिका" ही बना रहेगा।'

—गुरुदेव श्री सियाग

विश्व में इस समय 8 अरब से अधिक मानव जनसंख्या है, जो विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों, मत-मतान्तरों को मानती है एवं विभिन्न प्रकार की धार्मिक क्रियाओं का पालन करती है। इस प्रकार विश्व में सदैव धर्म एवं अध्यात्म एक महान अवधारणा रहे हैं। धर्म या अध्यात्म का केन्द्र बिन्दु है 'ईश्वर' जिसकी अनुभूति व प्राप्ति के लिए हर धर्म व संप्रदाय का अपना दर्शन एवं मार्ग रहा है।

आज के युग में इन तरीकों एवं प्रक्रियाओं की प्रासंगिकता एवं परिणाम पर अधिकांश लोगों को शंका है, फिर भी सभी मौन हैं। सभी धर्मों के उपदेशक बीते दिनों की बात करते हुए आगे बढ़ना चाहते हैं, सब कह रहे हैं- राम ने यह किया, बुद्ध ने यह किया, ईसा ने यह किया आदि। आगामी मानव जाति का क्या होगा, भविष्य में कौन, क्या और कैसे करेगा, इस बारे में सभी मौन है। क्या मानव जाति का पूर्ण विकास हो चुका है? क्या मनुष्य जाति प्रगतिशील है या पतनशील? अगर पतन हो रहा है तो यह पतन भी कहां तक होगा? क्या उत्थान का कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा है? इन प्रश्नों के सम्बन्ध में धर्म जगत तो प्रायः मौन एवं किंकर्तव्यविमूढ़ है।

अब दूसरा पहलू है आधुनिक विज्ञान, जिसने एक से बढ़कर एक उपकरण, यंत्र, मशीनें बना दी किन्तु विज्ञान मानव की सबसे मूल एवं परम मांग को पूर्ण नहीं कर सका है, वह है शान्ति। विज्ञान के आविष्कार सुख, आराम, भोग दे सकते हैं लेकिन विज्ञान कर्म-संस्कार और मानव मन की अनसुलझी गुत्थियों तक नहीं पहुंच पा रहा है। शांति प्रदान करने की जगह विज्ञान ने मानव जाति को बारुद के ढेर पर बिठा दिया है। विज्ञान ने मानव को अंतरिक्ष की यात्रा पर तो भेज दिया है लेकिन विज्ञान मानव मन व चेतना की यात्रा नहीं करवा सकता है। आज आतंकवाद, असाध्य रोग, तनाव, चिन्ता, नशा इत्यादि मानवता के सामने राक्षसों के समान चुनौती बन कर खड़े हैं।

क्रमशः.....

DOWNLOAD BOOK FROM: https://www.hindibook.in/

ऐसे अंधकार पूर्ण युग में क्या प्रकाश की, विकास की अथवा आशा की कोई नवीन किरण नहीं है? क्या भौतिक विज्ञान के सामने खड़े अनसुलझे प्रश्नों का उत्तर अध्यात्म विज्ञान में मिल सकता है? क्या विज्ञान एवं अध्यात्म का समन्वय नहीं हो सकता है? क्या इन प्रश्नों का विज्ञान व धर्म जगत दोनों के पास पूर्णतः सटीक उत्तर नहीं है?

लेकिन कष्ट, पीड़ा, तनाव से जूझ रहे अरबों मनुष्यों की पुकार व्यर्थ नहीं हो सकती। उनके लिए मुक्तिदाता बने हैं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र के संस्थापक समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग, जिन्होंने धर्म को पूर्ण विज्ञान मानते हुए सम्पूर्ण विश्व की समस्त समस्याओं के समाधान का क्रियात्मक एवं व्यवहारिक पथ प्रशस्त करते हुए एक वैश्विक आध्यात्मिक क्रान्ति का सूत्रपात किया है।

सनातन धर्म ही विश्व धर्म

सनातन धर्म आदि धर्म है, जिसने संसार को मानवीय मूल्य एवं अध्यात्म का ज्ञान दिया है। हजारों वर्षों से ऋषियों, योगियों और अवतारों ने इसे पोषित किया है। परन्तु कालखंड के प्रभाव से हमने हमारी उस आध्यात्मिक विरासत को खो दिया और हमारे धर्म शास्त्रों में वर्णित तथ्यों को वैज्ञानिक युग में सिद्ध करने में असफल रहे हैं, फलतः हमारे शास्त्र काल्पनिक व तिलिस्मी उपन्यास लगते हैं। विज्ञान और तर्क में आस्था रखने वाले लोग धार्मिक मान्यताओं का मजाक उड़ाते हैं। धर्म जगत में लाखों लोग धार्मिक आराधनाएं कर रहे हैं लेकिन परिणाम नहीं मिलने के कारण निराश हो जाते हैं और कह भी नहीं पाते हैं कि हम असफल हो रहे हैं।

सनातन धर्म में वर्णित वेदांत और भारतीय योग दर्शन तो अद्वैत की बात करता है। अद्वैत का अर्थ है कि दो है ही नहीं, ईश्वर और हम अलग–अलग नहीं हैं, जो शरीर में है वही ब्रह्माण्ड में है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का ज्ञान इसी धर्म के द्वारा ही जाना जा सकता है। सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग ने इसी दर्शन को मूर्त रूप दिया है और योग शास्त्रों में वर्णित सभी रहस्यों का प्रामाणिक अनुभव करवाया है। इस प्रक्रिया से ही 21वीं सदी में वैदिक दर्शन पर आधारित सनातन धर्म ही विश्व धर्म होगा।

"मैं मेरे सद्गुरुदेव के आदेशानुसार सनातन धर्म का संदेश सम्पूर्ण विश्व के सकारात्मक लोगों तक पहुँचाने निकला हूँ।

मैं मानव मात्र को योग का प्रसाद बांटने संसार में निकला हूँ, यह योगदर्शन अन्य दर्शनों की तरह किसी प्रकार का खण्डन–मण्डन नहीं करता।

यह तो मानव मात्र को सम्पूर्ण रोगों से मुक्त होने की क्रियात्मक विधि बतलाकर मोक्ष प्रदान करता है।"

–गुरुदेव श्री सियाग

DOWNLOAD BOOK FROM: https://www.hindibook.in/

सिद्धयोग

नाथपंथ, हजारों वर्ष पूर्व महायोगी श्री मत्स्येन्द्रनाथजी ने प्रतिपादित किया व इन्हीं के परम शिष्य महायोगी श्री गोरक्षनाथजी ने इसे व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया। भारतीय योग दर्शन में नाथ योगियों का वहुत वड़ा योगदान रहा है। महर्षि पतंजलि ने योग दर्शन को लिपिवद्ध कर नियम बनाये जो 'योगसूत्र' के नाम से जाने जाते हैं।

पातंजलि योग दर्शन के अनुसार "चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है।" योग का साधारण अर्थ है (+) जोड़। लेकिन किसको–किससे जोड़ना? योग का उद्देश्य है – आत्मा का परमात्मा से मिलन। परन्तु आजकल योग के नाम पर सिर्फ शारीरिक कसरत ही करवायी जा रही है और उसका व्यवसायीकरण हो गया है। तामसिक वृति के लोगों ने योग को भी एक बिकाऊ विषयवस्तु वना दिया है।

वर्तमान समय में कथित योगाचार्य केवल शारीरिक व्यायाम करवाते हैं, जबकि योग का संबंध आत्मा व ईश्वर से है। महर्षि पातंजलि ने योगसूत्र में स्पष्ट लिखा है कि योग साधना के लिए ईश्वर का नाम जप आवश्यक होता है। समय तथा परिस्थितियों के कारण सम्पूर्ण संसार योग के पीछे भाग रहा है, लेकिन प्रश्न उठता है कि वास्तविक और सम्पूर्ण योग कौनसा है? योग का श्रेष्टतम व पूर्ण रुप है वह योग जो किसी समर्थ सद्‌गुरु की कृपा से जाग्रत कुण्ड़लिनी शक्ति द्वारा नियंत्रित होता है, जिसे सिद्धयोग या महायोग कहा जाता है।

अतः सिद्धयोग में सभी प्रकार के योग जैसे–भक्तियोग, कर्मयोग, राजयोग, हठयोग, सम्मिलित हैं, इसलिए इसे महायोग या पूर्णयोग भी कहते हैं। सिद्धयोग में समर्थ सद्‌गुरूदेव मंत्र, स्पर्श, दृष्टि द्वारा शक्तिपात दीक्षा देकर साधक की कुंडलिनी, शक्ति को चेतन करते हैं, जो ध्यान की अवस्था मे अपने नियंत्रण मे योग करवाती है।

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के सिद्धयोग से लाभ

- भारतीय योग दर्शन के अनुसार समस्त प्रकार के शारीरिक रोगों, मानसिक रोगों एवं आध्यात्मिक रोगों से पूर्ण मुक्ति संभव है।
- समस्त प्रकार के नशों जैसेः–शराब, अफीम, हेरोइन, भाँग, तम्बाकू, सिगरेट, स्मैक आदि से बिना परेशानी के पूर्ण मुक्ति संभव है।
- नियमित ध्यान द्वारा विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति व एकाग्रता में अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के दौरान प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए साधक समस्त प्रकार की सांसारिक परेशानियों से मुक्त होकर मानव जीवन के अन्तिम लक्ष्य 'मोक्ष' की स्थिति को प्राप्त करता है।

" ईश्वर प्रत्यक्ष अनुभूति एवं साक्षात्कार का विषय है, कथा व प्रवचन का नहीं।"

– सद्‌गुरूदेव श्री सियाग

DOWNLOAD BOOK FROM: https://www.hindibook.in/

कुण्डलिनी शक्ति

यह शक्ति ईश्वर की पराशक्ति है जिसे हम बाहर पार्वती, राधा, सीता, दुर्गा, या काली के रूप में पूजते हैं। यह जगतजननी है। यह मनुष्य शरीर में मूलाधार चक्र (रीढ की हड्डी का निचला हिस्सा) में सुषुप्तावस्था में रहती है। पूर्व जन्मों के संस्कार के कारण मानव शरीर में यह शक्ति सोई हुई (सुषुप्त) रहती है। कुण्डलिनी शक्ति का बाह्य स्वरूप हमारे शरीर एवं इन्द्रियों को क्रियात्मकता प्रदान करता है एवं आन्तरिक स्वरूप हमारे अन्तर में आध्यात्मिक प्रक्रिया को विकसित करता है। जब किसी ऐसे समर्थ सद्गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त हो जिसे कुण्डलिनी जागरण का सामर्थ्य प्राप्त हो तो यह शक्ति जाग्रत हो जाती है। कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत होने पर ही यथार्थ में साधक की आध्यात्मिक यात्रा प्रारम्भ होती है।

शक्तिपात दीक्षा व कुण्डलिनी जागरण

पूर्व में कुण्डलिनी जागरण पातंजलि योगदर्शन के आठों अंगों की नियमित साधना एवं तपस्या के पश्चात सम्भव होता था। वर्तमान में पातंजलि योग के आठ अंगों का पालन बौद्धिक प्रयासों द्वारा संभव नहीं है।

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग को उनके गुरु बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी की अहैतुकी कृपा से यह सामर्थ्य प्राप्त है। गुरुदेव सार्वजनिक रुप से दिव्य मन्त्र की दीक्षा द्वारा शक्तिपात करके साधक की कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत करते हैं। निर्गुण निराकार और सगुण साकार दोनों सिद्धियों की प्राप्ति होने से सद्गुरुदेव श्री सियाग के स्पर्श में, दृष्टि में, उनकी आवाज़ में, उनकी छवि में, सभी में कुण्ड़लिनी जागरण करने की सामर्थ्य है।

क्रमशः.....

DOWNLOAD BOOK FROM: https://www.hindibook.in/

यहाँ तक कि गुरुदेव के चित्र का स्मरण व दर्शन करने, उनसे प्रार्थना करने मात्र से किसी भी साधक की कुंडलिनी जागृत हो जाती है, इसे ही शक्तिपात कहा जाता है। यह शक्ति जागृत होकर साधक के मन, बुद्धि एवं इन्द्रियों को नियंत्रण में कर लेती है और रीढ़ की हड्डी में स्थित सुषुम्ना नाड़ी के भीतर उर्ध्वगमन करते हुए अपने अन्तिम लक्ष्य अर्थात सहस्त्रार में स्थित परमात्मा में लय हो जाती है। इसे ही 'मोक्ष' कहते है।

जाग्रत कुण्डलिनी शक्ति पातंजलिं योगदर्शन में वर्णित आठों अंगो (यम, नियम, आसन, प्रत्याहार, प्राणायाम, धारणा, ध्यान व समाधि) का पालन स्वयं अपने अधीन करवाती है व शरीर की आवश्यकतानुसार ध्यान के दौरान विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसे – आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः करवाती है। यह योग केवल गुरुदेव सियाग का ध्यान करने की अवस्था में कुण्डलिनी शक्ति के नियंत्रण में ही होता है। साधक इस दौरान अपने तन, मन के बारे में पूरा सचेत होता है।

यह सम्पूर्ण प्रक्रिया ही गुरुदेव सियाग का सिद्धयोग है, इन स्वतः होने वाली यौगिक क्रियाओं से साधक का शरीर समस्त प्रकार के शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक रोगों एवं नशों से पूर्ण रूप से मुक्त हो जाता है।

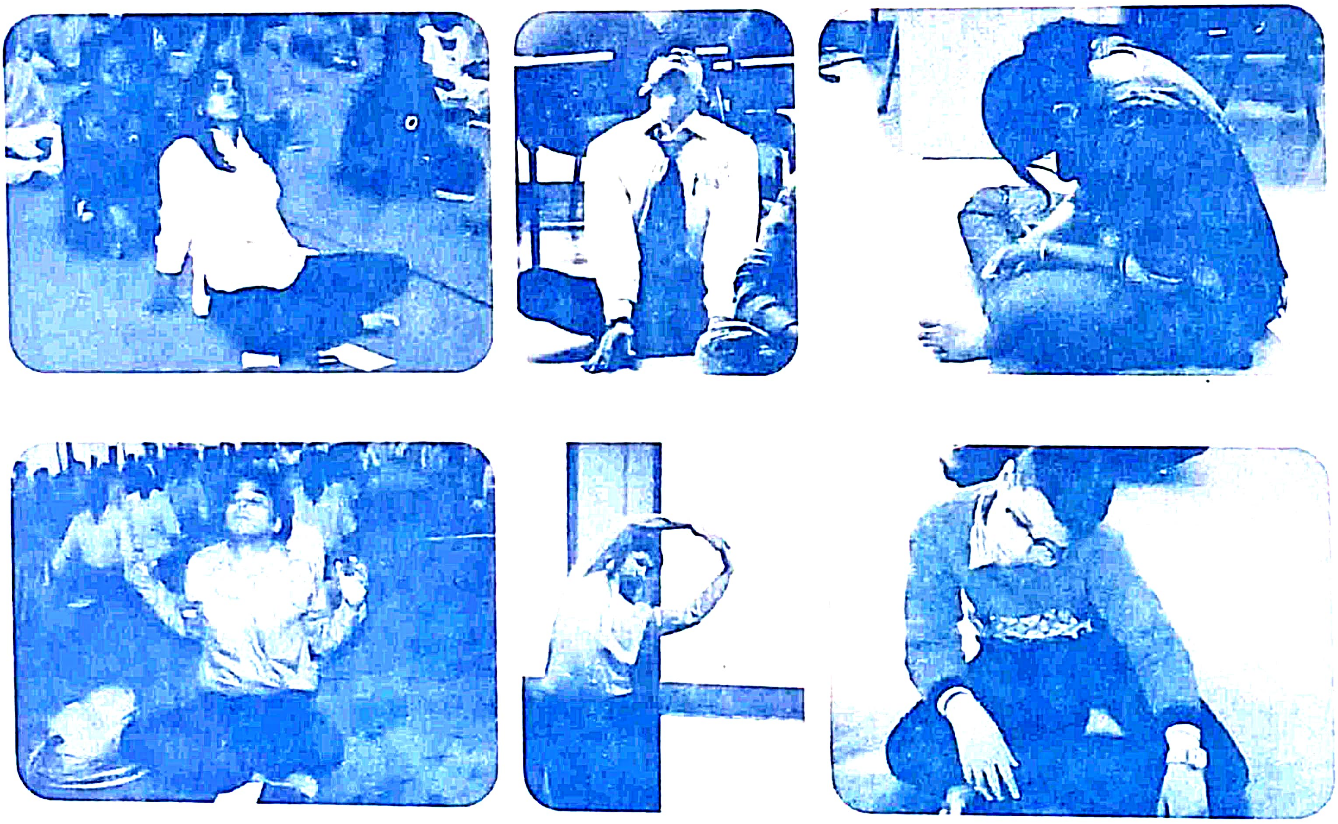

सिद्धयोग में ध्यान के दौरान स्वतः होने वाली विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएं

DOWNLOAD BOOK FROM: https://www.hindibook.in/

संजीवनी मंत्र

विश्व के सभी धर्मों में कितनी भी विभिन्नताएं हों पर एक बात पर सभी धर्म एकमत है कि ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति एक दिव्य शब्द से हुई है। इस सम्बन्ध में भारतीय योग दर्शन भी 'शब्द से सृष्टि की उत्पत्ति 'एवं' शब्द ब्रह्म से परब्रह्म की प्राप्ति के सिद्धान्त को मानता है। वर्तमान में भौतिक विज्ञान के लोग भी इस सत्य को मानकर मंत्रों के उच्चारण से मानवता में होने वाले परिवर्तनों पर शोध कार्य कर रहे हैं।

पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग भी साधकों को अपनी दिव्य वाणी में एक दिव्य मंत्र देते हैं जिसे उन्होंने 'संजीवनी मंत्र' की संज्ञा दी है। इस मंत्र का नियमित रुप से मानसिक जाप करने से साधकों में स्वतः योग करवाने वाली दिव्य शक्ति कुण्डलिनी चेतन हो जाती है जिससे साधकों में स्वतः यौगिक क्रियाएं होने लगती है व वैज्ञानिक रूप से परिणाम आने लगते हैं।

पूज्य गरुदेव इस मंत्र का अधिक से अधिक मानसिक जाप करने को कहते हैं जिससे साधक 'अजपा–जाप' की स्थिति में आ जाता है अर्थात मंत्र का मानसिक जाप स्वतः ही होने लगता है, ऐसा लगता है कि यह मंत्र अन्दर ही जपा जा रहा है। 'इस अवस्था को संतो ने कहा है कि 'अब कैसे छूटे नाम रट लागी'।

अजपा–जाप की स्थिति के बाद यह मंत्र–जाप एक दिव्य ध्वनि में परिवर्तित हो जाता है जिसे 'नाद' की संज्ञा दी गई है। इस अवस्था में साधक को एक दिव्य ध्वनि सुनाई देती है जिससे साधक को असीम आनंद की अनुभूति होती है इस अवस्था को गुरुनानक जी ने कहा है कि 'नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात'।

गुरुदेव सियाग द्वारा दिये गये इस मंत्र का जाप नियमित रुप से करने पर वैज्ञानिक रूप से परिणाम आयेंगे व साधक जैसे जैसे मंत्र जप करता रहेगा वह मंत्र जप की विभिन्न अवस्थाओं को प्राप्त करते हुए समस्त प्रकार की शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक समस्याओं से मुक्त होगा व निरन्तर दिव्य आनंद व शांति की स्थिति बनी रहेगी।

अतः साधक को गुरुदेव सियाग के बताये संजीवनी मंत्र का अधिक से अधिक मानसिक जाप करना चाहिए जिससे ध्यान भी अच्छा लगता है और परिणाम भी शीघ्र मिलते हैं।

संजीवनी मंत्र प्राप्त करने का तरीका

गुरु सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र प्राप्त करने के निम्न तरीके हैं।

- सोशल मीडिया जैसे –
  यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम आदि पर "गुरु सियाग मंत्र" सर्च करके
- 07533006009 पर कॉल करके
- 07540067676 पर मिस्ड कॉल देकर
- वेबसाइट – www.the-comforter.org पर सर्च करके

DOWNLOAD BOOK FROM: https://www.hindibook.in/

मंत्र दीक्षा के बाद क्या ?

गुरूदेव से मंत्र दीक्षा लेने के पश्चात् यह साधना अत्यन्त सरल है। आप अपना सामान्य जीवन जीते हुए अपने दैनिक कार्यो और सांसारिक कर्तव्यों को निभाते हुए प्रतिदिन सुबह–शाम 15 मिनट ध्यान करें और गुरुदेव द्वारा बताये दिव्य मंत्र का निरन्तर मानसिक जाप करते रहें। इस हेतु आपको कोई विशेष आडम्बर या दिनचर्या में बदलाव की कतई आवश्यकता नहीं है। केवल इस आराधना को अपने जीवन का एक हिस्सा बना लेवें और नियमित रूप से इसे करते रहें।

मानसिक रुप से नाम जप कभी भी कहीं भी किया जा सकता है। इस हेतु कोई विशेष अनुशासन नहीं थोपा जाता है और यह आपके दैनिक जीवन में कहीं भी कोई बाधा उत्पन्न नहीं करता है। इस सरल साधना से आप अपने जीवन का सर्वांगीण विकास कर अपने सांसारिक कर्तव्यों का भी अच्छे से निर्वहन कर सकते हैं। कई लोग पूछते है कि ध्यान और नाम जपने से कहीं हम संन्यासी तो नहीं बन जायेंगे? नहीं! पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग स्वयं गृहस्थ जीवन जीए और साधकों को भी गृहस्थ जीवन जीते हुए इस साधना को करते रहना है। ध्यान रहे आप के घर गृहस्थी में यह साधना कभी भी कोई कष्ट या रूकावट नहीं आने देती है। सभी स्त्री, पुरूष, युवा एवं बालक बालिकाएं इस साधना को सहजता एवं सरलता से कर सकते हैं।

वृत्तियों के रुपान्तरण से मनुष्य का दिव्य रुपान्तरण

"मैं तीन जातियों (सतोगुण, रजोगुण व तमोगुण) में ही विश्वास करता हूँ। चौथी जाति गुरु की होती है। इन चार जातियों के सिवाय अन्य जाति विश्व में हो ही नहीं सकती। अतः मैं मानव कृत जाति, धर्म और राष्ट्र की सीमाओं का उल्लंघन करते हुए, मेरे असंख्य गुरुओं की कमाई का 'गुरु प्रसाद' जो कि मेरे परम दयालु गुरुदेव की अहैतुकी कृपा के कारण अनायास ही मुझे प्राप्त हो गया है, विश्व में बाँटने निकला हूँ। मैं वैदिक दर्शन के "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" के सनातन सिद्धांत में विश्वास करता हूँ। मेरे गुरुदेव का स्पष्ट आदेश है कि मांगने आया कोई भी व्यक्ति खाली हाथ नहीं लौटना चाहिए।

—सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

त्रिगुणमयी माया से सृष्टि की उत्पत्ति हुई हैं। मनुष्य में उसके प्रारब्ध के अनुसार तीन प्रकार की वृतियां होती है, सात्विक, राजसिक व तामसिक। प्रत्येक मनुष्य में कम–ज्यादा मात्रा में ये तीनों वृत्तियां होती हैं, जिसमें एक प्रधान व दो गौण होती है। मनुष्य का व्यक्तित्व इसी के अनुरुप होता है।

इस साधना में दिव्य मंत्र के जाप व ध्यान से व्यक्ति में वृत्तियों का रुपान्तरण क्रमशः तामसिक–राजसिक–सात्विक क्रम में होने लगता है। जिससे मनुष्य का पूरा जीवन ही पवित्र व दिव्य हो जाता है। इस बदलाव के कारण ही मनुष्य के खान–पान, आचार–विचार, व्यवहार व संस्कार में बदलाव दिखने लगता है। उसकी नशे सम्बन्धी आन्तरिक मांग भी समाप्त हो जाती है जिससे सभी प्रकार के नशे छूट जाते हैं व मनुष्य का शेष जीवन सात्विक हो जाता है।

इस सबंध में महर्षि अरविन्द की स्पष्ट भविष्यवाणी है कि "आगामी मानव जाति दिव्य स्वरुप धारण करेगी।"

DOWNLOAD BOOK FROM: https://www.hindibook.in/

सद्गुरुदेव सियाग का सिद्धयोग एवं युवा वर्ग

गुरूदेव के सिद्ध योग दर्शन की सर्वाधिक परिपूर्ण व्याख्या महर्षि अरविन्द ने ही की है। उन्होंने इस क्रांति को युग युवाओं की क्रांति तक कहा है। तो वर्तमान में युवा वर्ग इसे क्यों करें ?

युवा वर्ग शक्ति व ऊर्जा से ओतप्रोत होता है। लेकिन इस ऊर्जा का सकारात्मक उपयोग एवं श्रेष्ठ परिणाम नहीं आने से युवा वर्ग की वह ऊर्जा व्यर्थ हो जाती है। अथक परिश्रम के उपरांत भी युवा को अपने कार्यक्षेत्र में सफलता नहीं मिलती है तो वह निराश हो जाता है। पूरे जीवनकाल में वह केवल रोजी–रोटी का संघर्ष करता दिखता है। लेकिन इस योग से युवा की आन्तरिक दिव्य शक्ति चेतन होकर उसका ईश्वरीय निर्देशन करती है और बाधाओं को समाप्त करती है। उसकी सुप्त शक्तियों को जागृत कर उसे असंभव कार्य करने की क्षमता और साहस प्रदान करती है।

वर्तमान में गुरूदेव के लाखों युवा शिष्यों पर यह बात सिद्ध हो रही है। युवा इस आराधना से रोगों, नशों, तनाव एवं निराशा से पूर्णतयाः मुक्त होकर निर्मल, आनंदपूर्ण व ऊर्जामय जीवन जीते हैं व अपने कार्यक्षेत्रों में श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करते हैं। उनकी विकसित आध्यात्मिकता उन्हें स्वयं एवं राष्ट्र के विकास के लिए कार्य करने की योग्यता प्रदान करती है।

भारतीय योग दर्शन कभी भी पलायन का मार्ग नहीं बताता वरन् संसार में रहकर वास्तविक समस्याओं का समाधान करते हुए जीवन का पूर्ण विकास करने का मार्ग बताता है। अतः यह योग युवा वर्ग के लिए एक वरदान है।

ध्यान की अवस्था में युवाओं को कुंडलिनी शक्ति जनित योग

DOWNLOAD BOOK FROM: https://www.hindibook.in/

सद्गुरुदेव सियाग का सिद्धयोग एवं भारत

लगातार विदेशी आक्रमणों ने भारत देश को जर्जर और कमजोर कर दिया। एक महान देश का पतन हुआ और हम घोर गरीबी और अज्ञान से घिर गये व सबसे श्रेष्ठ होते हुए भी सदियों से दासता व गुलामी के बंधन में जकड़े रहे। इस पीड़ा का आभास महर्षि अरविन्द घोष को हुआ और उन्होनें आध्यात्मिक साधना के द्वारा वह सूत्र खोज निकाला जो भारत को पुनः विश्व गुरु बना सकता है।

श्री अरविन्द के अनुसार योग ही भारत का पुनरुत्थान करेगा, योग के द्वारा ही भारत उठेगा, योग के द्वारा ही सनातन धर्म उठेगा और विश्व को यह महाप्रसाद बांटकर भारत खोई हुई प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त करेगा।

अब प्रश्न उठता है कि कैसा योग, कौनसा योग? क्या शारीरिक कसरत योग है? योग वह है जो आपको पूर्ण चेतन कर ईश्वरीय शक्ति देकर विकसित करता है, यह शक्ति–सम्पन्न योग है सद्गुरुदेव की कृपा से चेतन कुण्डलिनी शक्ति द्वारा नियंत्रित योग, जिसे हमारे ऋषियों व योगियों ने पूर्ण योग, महायोग, व सिद्धयोग कहा है। सद्गुरुदेव श्री सियाग कहते हैं कि इस योग से मानव जाति का दिव्य रुपान्तरण होगा, वैदिक धर्म विश्व धर्म बनेगा और सम्पूर्ण विश्व भारत को अपना गुरु मानेगा।

ईश्वर ने प्रत्येक राष्ट्र को एक निश्चित भूमिका दी है, पश्चिम देशों को भौतिक विज्ञान की उन्नति का वरदान दिया है और उन्होने इसे चरम सीमा पर पहुंचा भी दिया है लेकिन फिर भी मानवता को शांति और सुख नहीं दिला सके हैं। भारत को उससे भी बड़ी एक महत्वपूर्ण भूमिका दी है, वह है अध्यात्म व योग द्वारा मानवता का उत्थान । अध्यात्म व योग से ही भारत विश्व का कल्याण करेगा और मानव जाति को दिव्यता और शांत्ति प्रदान करेगा।

यदि भारत अपने इस आध्यात्मिक ज्ञान को विश्व के अन्य देशो में भेज सके तो एक वैज्ञानिक युक्ति पूर्ण हो जायेगी एवं पश्चिम का विज्ञान और भारत का अध्यात्म मिलकर धरती पर स्वर्ग निर्माण की परिकल्पना को पूर्ण कर लेंगे। इस प्रकार श्री अरविन्द द्वारा देखा गया वह महान स्वप्न साकार रुप ले लेगा। विश्व को भाईचारा, शांति, सम्पन्नता मिलेगी एवं मानवता को कष्टों व संघर्षों से सदा–सदा के लिए मुक्ति मिल जायेगी।

DOWNLOAD BOOK FROM: https://www.hindibook.in/

सद्गुरुदेव सियाग का सिद्ध योग एवं आधुनिक विज्ञान

क्या यह आराधना वैज्ञानिक है? गुरूदेव सियाग कहते हैं जहां विज्ञान समाप्त होता है, अध्यात्म वहां से प्रारम्भ होता है। इस योग साधना से मानव देह का दिव्य रूपान्तरण होता है।

आधुनिक विज्ञान ने जो भी प्रगति हासिल की है वह एक सत्य है परन्तु यह प्रगति अत्यन्त न्यून है व मानव जीवन की समस्त समस्याओं का समाधान नहीं कर सकती। अतः विज्ञान को भी आगे की प्रगति के लिये अध्यात्म का सहारा लेना पड़ेगा। सद्गुरुदेव सियाग कहते हैं कि मैं आपका परिचय आपके अन्दर बैठे डॉक्टर से करवाता हूं। अतः बाहर व अन्दर वाला डॉक्टर मिलकर किसी भी रोग का निदान कर सकते हैं। यह अन्दर वाला डॉक्टर कुण्डलिनी शक्ति ही होती है। अतः स्पष्ट है कि आधुनिक भौतिक विज्ञान व अध्यात्म विज्ञान दोनों परस्पर विरोधाभासी नहीं है बल्कि अध्यात्म विज्ञान ही आधुनिक विज्ञान को पूर्ण कर सकता है।

इस सम्बन्ध में महान् वैज्ञानिक आंइस्टीन ने लिखा है: ''तत्व की खोज के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ कि आगे का विकास केवल भारतीय योगी ही कर पायेंगे। वह कौन सा विकास है जिसकी बात स्वयं आंइस्टीन ने कही है? वह है भारत के अध्यात्म विज्ञान द्वारा होने वाला दिव्य रुपांतरण।''

महर्षि अरविन्द की आध्यात्मिक साधना

अमरीका के शिकागो शहर में 1893 में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानन्द ने महान हिन्दू धर्म व दर्शन के प्राचीन गौरव व भावी विकास दोनों की झलक दिखाई थी। कालान्तर में एक अन्य महापुरुष श्री अरविन्दो घोष ने कारावास में योग साधना द्वारा श्री कृष्ण की प्रत्यक्ष अनुभूति की तथा श्री कृष्ण से सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण का वरदान प्राप्त किया। श्री अरविन्द ने राष्ट्र, धर्म की समस्त सीमाओं से परे सम्पूर्ण मानव जाति के दिव्य रुपान्तरण का मार्ग खोजकर घोषणा कर दी कि आगामी मानव जाति का दिव्य रुपान्तरण होगा।
रुपान्तरण का अर्थ है असत्य, अधर्म का नाश एवं संसार में सतोगुण की स्थापना।

भारत के महान योगी महर्षि अरविन्द घोष ने अपने जीवन काल में 40 वर्ष की अनवरत आध्यात्मिक आराधना करते हुए सनातन धर्म के गूढ रहस्य को खोज निकाला और भारत के लिए उसके खोये हुए गौरव को पुनः स्थापित करने का साधन व साध्य दोनों ही जान लिए। इस सम्बन्ध में साधना के दौरान अरविन्द ने ईश्वर के प्रत्यक्ष निर्देशन में सम्पूर्ण मानव जाति के हितार्थ, कल्याण एवं पूर्ण विकास का दर्शन विकसित कर लिया जिसे श्री अरविन्द ने पूर्णयोग कहा है । जिसमें उन्होने स्पष्ट कहा है कि 24 नवम्बर 1926 को अवतरित सत्ता ही मानवता का कल्याण करेगी। इसी दिन पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग का अवतरण दिवस मनाया जाता है। उन्हीं का ध्यान करने से संपूर्ण मानव जाति का दिव्य रूपांतरण होगा।

क्रमशः.....

DOWNLOAD BOOK FROM: https://www.hindibook.in/

श्री अरविन्द भारतीय अवतारवाद के अनुसार वर्णित दशम् अवतार अर्थात कल्कि अवतार के स्पष्ट अवतरण की भी घोषणा करते हैं। श्री अरविन्द के अनुसार भागवत चेतना ने 24 नवम्बर 1926 को पृथ्वी पर अवतरण ले लिया है, और यह अवतरित शक्ति 1969 से अगले पचास साल तक अपना कार्य सम्पन्न करके लौह युग अर्थात कलियुग को समाप्त कर देगी।

इसी क्रम में उन्होने कहा था कि भारत का उत्थान दो मंत्र करेंगे। एक वन्दे मातरम् जो भारत को आजादी प्रदान करेगा । दूसरा एक गुप्त एवं रहस्यपूर्ण संजीवनी मन्त्र है जो बाद में प्रकट होगा।

पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त दिव्य मन्त्र ही वह गुप्त संजीवनी मंत्र है। अतः यह परिवर्तन मानव जाति में नियत और अवश्यम्भावी था। इसी मंत्र द्वारा भारत अपना पुराना गौरव पुनः प्राप्त करेगा और विश्व गुरु का पद हासिल करेगा। जिसके स्वप्न दृष्टा स्वामी विवेकानन्द और महर्षि अरविन्द थे, एवं साकारकर्ता पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग हैं।

पहली बार यह रुपांतरण किसी एक मानव शरीर में होना बेहद मुश्किल था लेकिन सद्गुरुदेव सियाग ने अत्यंत कठिन साधना व त्याग द्वारा इस रुपांतरण को प्राप्त किया। अतः गुरुदेव सियाग इस चेतना की अभूतपूर्व यात्रा के प्रथम यात्री हैं।

महर्षि अरविंद के अनुसार गुरूदेव सियाग ही वह भागवत चेतना हैं, जिन्होंने भगवान **श्रीकृष्ण** के वचन अनुसार 24 नवम्बर 1926 को अवतरण लेकर सम्पूर्ण मानवता में इस रुपान्तरण के दिव्य उद्देश्य को सम्पन्न करने का दायित्व लिया है। हिन्दू धर्म में वर्णित अवतारवाद के सिद्धांत के अनुसार सम्पूर्ण मानवता के दिव्य रुपांतरण का यह कार्य अब दसवें अवतार ‘ कल्कि ’ द्वारा ही सम्पन्न किया जायेगा। सद्गुरुदेव सियाग के शिष्यों में नियमित साधना से प्राप्त होने वाले बदलावों से ईश्वर द्वारा श्री अरविन्द को दिए वचन के पूर्ण होने की पुष्टि होती है।

नये साधकों के लिए सामान्य जानकारी

- ध्यान के दौरान यौगिक क्रियाओं व अनूभुतियों से घबराए नहीं, यह पूर्णतः वैज्ञानिक प्रक्रिया है और कुंडलिनी शक्ति के नियंत्रण में केवल गुरूदेव का ध्यान करते समय ही होगी।
- ठीक होने के पश्चात् यदि साधक ध्यान व मंत्र जप बन्द कर देता है तो उसकी बीमारी पुनः प्रकट हो सकती है।
- भारतीय योग दर्शन कहता है कि ऐसा कोई रोग नहीं है जो ठीक न हो सकता हो। गुरुदेव द्वारा शिष्यों को जो मंत्र दिया जाता है वह संजीवनी मंत्र है जिसका मतलब है कि यदि कोई बिलकुल मौत के किनारे पर पहुँच चुका है और पूर्णविश्वास के साथ मंत्र जप एवं ध्यान करता है तो वह रोगमुक्त हो जायेगा।
- साधक को अपनी दिनचर्या में कोई परविर्तन किये बिना दिन रात अधिक से अधिक मंत्र का जप करना चाहिए। साधक को दिन में दो बार कम से कम 10 से 15 मिनट के लिये खाली पेट ध्यान करना चाहिए।
- साधक जितना अधिक मंत्र जप समर्पण के साथ करेगा उतनी ही तेजी के साथ वह रोग मुक्त होगा।
- साधक को किसी के द्वारा दिये यंत्र, धागा, ताबीज या अन्य कोई ऐसी चीजें जो जादू टोने से सम्बन्ध रखती हों, नहीं पहननी चाहीए।
- अगर कोई साधक औषधि ले रहा है तो कुछ दिनों के पश्चात् उसे स्वतः ही उनकी आवश्यकता महसूस नहीं होगी और धीरे–धीरे वह छूट जायेंगी।

DOWNLOAD BOOK FROM: https://www.hindibook.in/

कल्कि अवतार (KALKI AVTAR)

भारत अवतारों की भूमि है, जब जब भारत में धर्म की क्षति हुई तो ईश्वर ने मानव देह में आकर मानव जीवन को अंगीकार कर धर्म की रक्षा की। वर्तमान समय में चारो तरफ घोर अन्धकार और अधर्म का साम्राज्य है तो क्या मानवीय प्रयत्नों से इसका अंत संभव है? कदापि नहीं। भागवत गीता के अनुसार–

"यदा–यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥"
– श्रीमद् भगवद्गीता (4–8)

40 वर्षों की साधना के बाद श्री अरविन्द ने यह जाना कि केवल कल्कि अवतार ही इस कलियुग का अंत करेगा। महर्षि अरविन्द ने इस सम्बन्ध में कहा है–

"24 नवम्बर 1926 को श्रीकृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्रीकृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं है। श्रीकृष्ण के अवतरण का अर्थ है अधिमानसिक देव का अवतरण जो जगत् को अतिमानस और आनन्द के लिए तैयार करता हैं। श्रीकृष्ण आनन्दमय हैं वे अतिमानस को अपने आनन्द की ओर उद्बुद्ध करके विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।"

क्रमशः.....

DOWNLOAD BOOK FROM: https://www.hindibook.in/

"24 नवम्बर 1926 को इस पृथ्वी पर अवतरित हुई सत्ता (Supramental Force) 1967 में मानवता में प्रत्यक्षानुभूति कराने लगेगी और यह अवतरित सत्ता (दसवां अवतार) सम्पूर्ण मानवता में एक नया परिवर्तन लायेगी व अवतारवाद के सिद्धान्त के अनुसार दसवें अवतार के कारण सम्पूर्ण मानव जाति पूर्णता प्राप्त करेगी।"

सद्गुरुदेव सियाग के चित्र का ध्यान करने व उनके द्वारा बताये दिव्य मंत्र के जप से विश्व में कहीं भी और कभी भी व्यक्ति चेतन हो सकता है और उसकी वृत्तियाँ बदल जाती हैं।

पृथ्वी के इतिहास में यह पहली बार घटित हुआ है जब एक निर्जीव चित्र का प्रभाव एक सजीव व्यक्ति पर पड़ता है व उसका ध्यान लग जाता है और ध्यान के दौरान स्वतः यौगिक क्रियाएं होती हैं, और अध्यात्मिक अनुभूतियां होने लगती है। मनुष्य की सभी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, एवं भौतिक समस्यायें समाप्त हो जाती है। यह दिव्य कार्य केवल अवतार द्वारा ही सम्भव है किसी सामान्य गुरु द्वारा नहीं। सद्गुरुदेव सियाग की शक्ति व सामर्थ्य सर्वव्यापक और शाश्वत रुप से कहीं भी और कभी भी और किसी को भी प्रभावित कर सकती है। ऐसा गत 35 वर्षो से लाखों साधकों ने अनुभव किया है। ध्यान की अवस्था में अनेक साधकों ने सद्गुरुदेव सियाग को श्वेत वस्त्रधारी व श्वेत अश्व पर विराजित कल्कि अवतार के रुप में स्पष्ट अनुभव किया है। कोई भी व्यक्ति स्वयं ध्यान करके ईश्वर का प्रत्यक्ष अनुभव व साक्षात्कार कर सकता है क्योंकि ईश्वर प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार का विषय है, कथा व प्रवचन का नहीं।

सिर्फ गुरुदेव की फोटो से ही ध्यान कैसे लगता है?

गुरुदेव की फोटो से ध्यान इसलिए लगता है क्योकि गुरुदेव को निर्गुण निराकार (गायत्री) व सगुण साकार (श्रीकृष्ण) की सिद्धियां एक ही जन्म में प्राप्त हो गयी। इससे पूर्व किसी भी व्यक्ति को एक ही जन्म में दोनो सिद्धियाँ एक साथ प्राप्त नहीं हुई थीं।

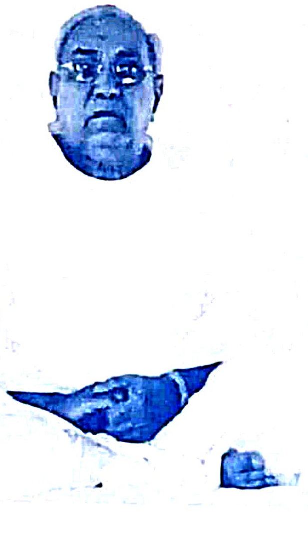

DOWNLOAD BOOK FROM: https://www.hindibook.in/

रोगों एवं नशों से मुक्त होने का पूर्ण वैज्ञानिक आधार

वर्तमान में प्रदूषण एवं अव्यवस्थित जीवन शैली के कारण अनेक रोग जैसे एड्स, कैंसर, हेपेटाइटिस–बी, हृदय रोग, अवसाद, डायबिटिज आदि चिकित्सा विज्ञान के लिए असाध्य चुनौती बन गये हैं।

सदगुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का ध्यान करने एवं उनके बताए संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप करने से ये सभी असाध्य रोग भी ठीक हो सकते हैं, वह भी पूर्णतः वैज्ञानिक आधार पर। मंत्र दीक्षा से जागृत कुण्डलिनी शक्ति ध्यान की अवस्था में साधक की आवश्यकता अनुसार यौगिक क्रियाएं करवाती है। ध्यानवस्था में उर्ध्वगमन करती कुण्डलिनी शक्ति के लिए साधक के शरीर का पूर्णतया निरोगी होना आवश्यक होता है, इसलिए साधक को भिन्न भिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएं करवा कर रोगमुक्त करती है। चूंकि वह शक्ति मातृसत्ता व आन्तरिक चेतना शक्ति है इसलिए उसे पता होता है कि शरीर का कौनसा अंग खराब है, वह उसी अंग की क्रियाएं करवा कर ठीक कर देती है। ये सभी यौगिक क्रियाएं गुरुदेव सियाग की कृपा से जागृत कुण्डलिनी शक्ति के नियंत्रण में ध्यान के दौरान स्वतः होती हैं।

वैज्ञानिक आधार–रोगियों के शरीर की समय समय पर मेडिकल जांच कराने पर स्वस्थ होने के प्रमाण मिलते हैं। अन्ततः मेडिकल जांच के आधार पर भी रोगी पूर्णतः स्वस्थ हो जाता है।

नशा – गुरुदेव कहते है नशा, मांग (Demand) व पूर्ति का (Supply) विषय है। जब तक मांग पूरी नहीं होगी तब तक व्यक्ति नशा करेगा, यदि उसकी मांग समाप्त किए बिना ही बाहर से सप्लाई को रोक दिया जाय तो वह बैचेन रहेगा, व नशा भी नहीं छूटेगा। अतः उसकी डिमाण्ड (मांग) को समाप्त करना आवश्यक है।

गुरुदेव सियाग के दिव्य मंत्र के नियमित जप एवं ध्यान से तामसिक वृतियों की मांग समाप्त हो जाती है व साधक को दिव्य आनंद की अनुभूति होने लगती है। परिणामस्वरूप नशे की पूर्ति, सप्लाई की आवश्यकता नहीं होती है और नशा समाप्त हो जाता है। इसी आधार पर लाखों लोगो को शराब, अफीम, हेरोईन, बीडी, सिगरेट, गुटखा आदि समस्त प्रकार के नशों से सहज में मुक्ति मिल रही है।

DOWNLOAD BOOK FROM: https://www.hindibook.in/

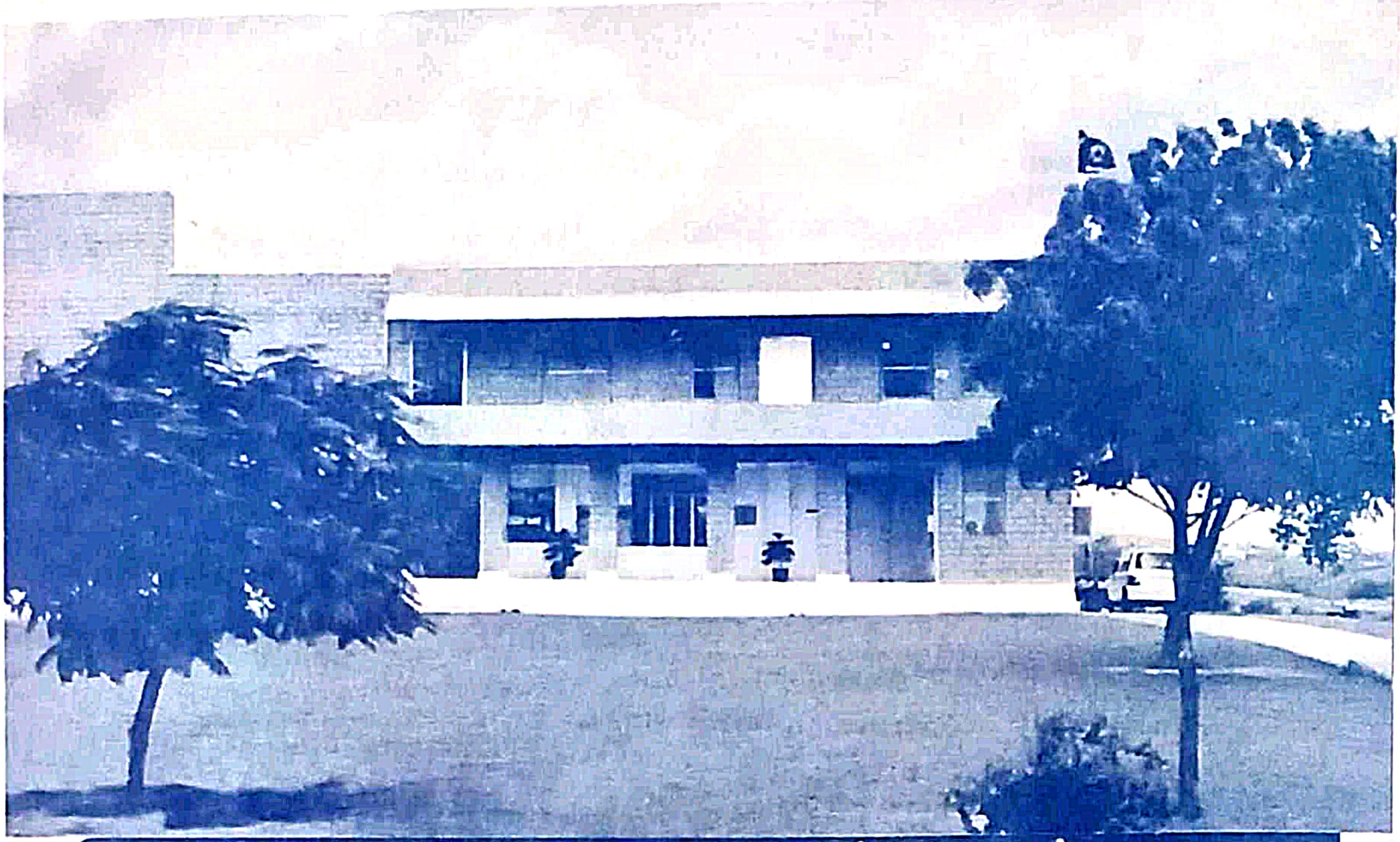

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग ने अपने गुरुदेव की आज्ञानुसार इस महान वैदिक दर्शन को विश्व दर्शन बनाने के लिए एक संस्था अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर की 1993 में स्थापना की। यह संस्था राजस्थान सरकार के देवस्थान विभाग से पंजीकृत है। गुरूदेव सियाग के लाखों शिष्य अपने तन, मन व धन से अपने सामर्थ्य अनुसार अपने स्तर पर लगातार इस दर्शन का प्रचार कर रहे हैं।

प्रचार–प्रसार क्यों करना चाहिए?

यह योग दर्शन व साधना व्यक्ति के जीवन की सम्पूर्ण समस्याओं के समाधान का क्रियात्मक, व्यवहारिक एवं वैज्ञानिक तरीका है। अतः गुरुदेव सियाग का सिद्धयोगमानव कल्याण का सर्वश्रेष्ठ साधन है। यहः पूर्णतः निःशुल्क, सरल साधना है, जिससे हर आयु, जाति वर्ग, सम्प्रदाय का व्यक्ति अपना स्वयं का हित कर सकता है।

इस दर्शन के प्रचार प्रसार से भारत विश्व गुरु बनेगा तथा भारत का सनातन धर्म, विश्व धर्म बनेगा। भारत अपनी वास्तविक प्रतिष्ठा केवल अपने अध्यात्म व योग द्वारा हासिल करेगा। अतः अपने स्वयं के कल्याण, राष्ट्र के गौरव की स्थापना व सनातन धर्म को विश्व धर्म बनाने तथा विश्व कल्याण व शान्ति की इच्छा रखने वाले हर जिम्मेदार मनुष्य का कर्तव्य है कि वह न केवल इस दर्शन को अपनाये वरन इसका प्रचार प्रसार भी करें। हम सभी स्वामी विवेकानंद जी के कथन कि 'सबसे बड़ा दान होता है, आध्यात्मिक दान' के अनुसार इस दिव्य दर्शन अर्थात दान को जन जन में बांटने के सहभागी बनें।

DOWNLOAD BOOK FROM: https://www.hindibook.in/

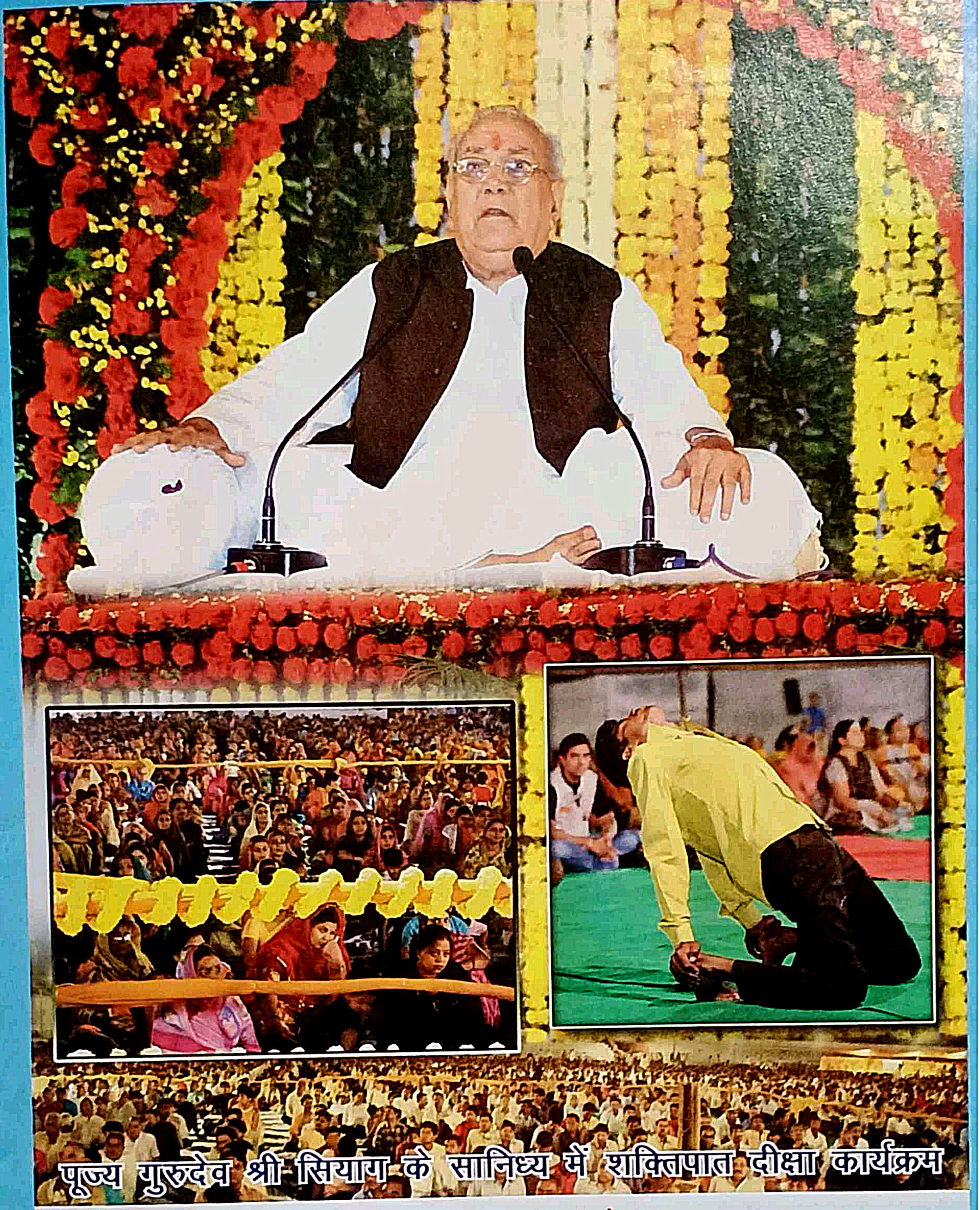

जीवन का एक उद्देश्य

"जीवन का एक उद्देश्य है, यह उद्देश्य है भगवान् को पाना।
भगवान् दूर नहीं है, वे हमारे अन्दर है, अन्दर गहराई में,
और भावनाओं तथा विचारों से ऊपर। भगवान् के साथ शान्ति और निश्चिति है
और सभी कठिनाइयों का समाधान है। अपनी समस्याएं भगवान् को सौंप दो। वे
तुम्हें कठिनाइयों से बाहर निकाल लेंगे।"

—श्री मां (श्वेत कमल) पेज संख्या—158

DOWNLOAD BOOK FROM: https://www.hindibook.in/

।। ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः ।।

• गुरुदेव सियाग से संजीवनी मंत्र दीक्षा प्राप्त करने हेतु +91 7533006009 पर कॉल करें।

ध्यान की विधि

• आरामदायक स्थिति में किसी भी दिशा में बैठें एवं 2 मिनट तक सद्गुरुदेव सियाग के चित्र को खुली आँखों से देखें, फिर आँखें बंद करके आज्ञाचक्र (भौंहों के बीच, जहाँ शिव का तीसरा नेत्र होता है) पर गुरुदेव के चित्र का स्मरण करें एवं मन ही मन गुरुदेव से ध्यान स्थिर करने हेतु प्रार्थना करें।

• फिर गुरुदेव के चित्र पर ध्यान केन्द्रित करते हुए गुरुदेव द्वारा दिए गए दिव्य मंत्र का मानसिक जाप बिना होंठ जीभ हिलाए करें।

• ध्यान के दौरान किसी भी प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसे– आसन, बंध, मुद्राएँ, प्राणायाम, स्वतः होने लगें तो उन्हें रोकने का प्रयास नहीं करें तथा उन्हें सहज में होने दें, यह शरीर की शुद्धि एवं रोग मुक्ति हेतु कुण्ड़लिनी शक्ति करवाती है। ध्यानावस्था के बाद स्थिति सामान्य हो जायेगी।

ध्यान नियमित रूम से दिन में दो बार प्रातः एवं सायं खाली पेट 15 मिनट करे।

• बीमारियों से जल्दी छुट़कारा पाने के लिए गुरुदेव द्वारा दिए गए मंत्र का हर समय सघन जप करते रहें और ध्यान से पूर्व गुरुदेव से प्रार्थना करते रहें।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, राजस्थान (भारत) - 342001

8010882288, 9784742595 www.the-comforter.org

गुरुदेव सियाग से जुड़ने हेतु मिस्ड कॉल करें- 7540067676

DOWNLOAD BOOK FROM: https://www.hindibook.in/